तृतीय वर्ष बी. ए. -- Revised

हिंदी - एक्षटेर्नल (External)

(2016 – 2017 , 2017 – 2018, 2018 – 2019 के शैक्षिक वर्ष के लिए)

प्रश्नपत्र – 6. मध्य युगीन कविता– सूर, तुलसी, बिहारी : Core Course – 06 ; Total Marks - 100

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र : 1. सूरदास– भ्रमरगीत सार (श्रीकृष्ण का वचन उद्धव के प्रति)
2. तुलसीदास- अयोध्याकाण्ड
3. बिहारी सतसई सार

पाठ्यपुस्तक : मध्यकालीन कविता का पाठ– सम्पादक : डॉ. त्रिभुवननाथ शुक्ल
(जयभारती प्रकाशन्इलाहबाद)

पाठ्यपुस्तक : बिहारी सतसई सार-संपा.अम्बिकाचरण शर्मा-विश्वम्भर'अरुण'
(प्रकाशक-रंजन प्रकाशन, बांके विलास, सिटी स्टेशन मार्ग, आगरा-3)

ईकाई 1.

'भ्रमरगीत' में वर्णित गोपियों का विरह-वर्णन, एवं चरित्र-चित्रण,
'भ्रमरगीत' में वर्णित निर्गुण पर सगुण की विजय,
'भ्रमरगीत' में उद्धव का चित्रण, 'भ्रमरगीत' का भाव पक्ष एवं कलापक्ष |

ईकाई 2.

रामचरितमानस के 'अयोध्याकाण्ड' की कथावस्तु,
'अयोध्याकाण्ड' के पात्र : मुख्य एवम् गौण पात्र , श्रीराम, लक्ष्मण, भरत, सीता,
कैकेयी, निषादराज, दशरथ, आदि। 'अयोध्याकाण्ड' का भाव-पक्ष एवम् कला-पक्ष।

ईकाई 3.

हिंदी सतसई परंपरा और उसमें'बिहारी सतसई' का स्थान, 'बिहारी सतसई' में प्रकृति-चित्रण,
'बिहारी सतसई' में विरह-वर्णन , बिहारी की बहुज्ञता,बिहारी की भक्ति-भावना |

ईकाई 4.

सगुण - भक्ति धारा की लाक्षणिकताएँ, सूरदास का साहित्यिक परिचय |
रीतिकालीन नामकरण और समय सीमा तथा प्रमुख विशेषताएँ , बिहारी का साहित्यिक परिचय |
भ्रमरगीत में श्रीकृष्ण का उद्धव के प्रति वचन, सूरदास का साहित्यिक परिचय |

ईकाई 5 .

'भ्रमरगीत' में कुब्जा, 'भ्रमरगीत' में संवाद, 'भ्रमरगीत' की भाषा।
. 'अयोध्याकाण्ड' में तुलसीदास की गीति योजना, 'अयोध्याकाण्ड' शीर्षक की सार्थकता।
'अयोध्याकाण्ड' में तुलसीदास की भक्ति भावना |
बिहारी: एक सफल मुक्तककार, 'बिहारी सतसई' में नीति, बिहारी की भाषा-शैली |

अंक विभाजन : पांच प्रश्न लिखने है | सभी प्रश्नों के अंक समान हैं |

ईकाई 1,2,3, 4 और 5 से एक– एक आलोचनात्मक प्रश्न (20 x 5 = 100)

सन्दर्भ पुस्तकें :

1. भक्ति काव्य का समाजशास्त्र– प्रेमशंकर
2. भक्ति काव्य की भूमिका– प्रेमशंकर
3. सूरदास - हरबंसलाल शर्मा
4. सुर – साहित्य – आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी
5. महाकवि सूरदास– नंददुलारे वाजपेयी
6. हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ– डॉ. जयकिशन प्रसाद खंडेलवाल
7. हिंदी साहित्य का इतिहास– रामचंद्र शुक्ल
8. हिंदी साहित्य का आदिकाल - आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी
9. हिंदी साहित्य का इतिहास– डॉ. नगेन्द्र
10. बिहारीःएक मूल्यांकन-डॉ.हरिचरण शर्मा
11. बिहारी रत्नाकर-जगन्नाथदास रत्नाकर

==========

प्रश्नपत्र – 7. गद्य – विधाएँ : गद्य विविधा, गिरती दीवारें: Core Course – 07

Total Marks - 100

पाठ्यपुस्तक : 1. गद्य – विविधा – डॉ. नागेश्वर सिंह , डॉ. माया प्रसाद (जयभारती प्रकाशन, इलाहबाद)

: 2.गिरती दीवारें (संक्षिप्त)– उपेन्द्रनाथ अश्क

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र :

ईकाई – 1.

उपन्यासः शब्द, परिभाषा, तत्त्व और विशेषताएँ,
निबंध, व्यंग्य, संस्मरण और रेखाचित्र का स्वरूप एवं हिंदी साहित्य में महत्त्व |
श्रीमान का स्वागत– बालमुकुन्द गुप्त, जमुना की तीरे-तीरे– विद्यानिवास मिश्र |

ईकाई – 2.

साहित्य की महत्ता– महावीर प्रसाद द्विवेदी , लोभ और प्रीति– रामचंद्र शुक्ल
तुम कब जाओगे, अतिथि– शरद जोशी , साहित्य और जीवन– नन्ददुलारे वाजपेयी
चरित्र का मानदण्ड– वासुदेव शरण अग्रवाल |

ईकाई – 3.

देवदारु - आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी , हिंदी भूषण बाबू शिवपूजन सहाय– रामविलास शर्मा
ठकुरी बाबा– महादेवी वर्मा, लाल कनेर के फूल और लालटेन वाली नाव– धर्मवीर भारती
दिवस का महाकाव्य– कुबेरनाथ राय |

ईकाई – 4.

'गिरती दीवारें' का कथानक-मूल्यांकन, 'गिरती दीवारें' में मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण ।
'गिरती दीवारें' तत्वों के आधार पर मूल्याङ्कन |

ईकाई – 5.

'गिरती दीवारें' के मुख्य एवं गौण पात्र- चेतन, शादीराम, रामानंद, शेठ फकीरचंद आदि
का चरित्र-चित्रण , व्यक्तिगत विशेषताओं का अध्ययन |

अंक विभाजन : पांच प्रश्न लिखने है | सभी प्रश्नों के अंक समान हैं |

ईकाई 1,2,3, 4 और 5 से एक– एक आलोचनात्मक प्रश्न (20 x 5 = 100)

संदर्भ-पुस्तकें :

1. हिन्दी उपन्यास का इतिहास– डॉ. गोपालराय (राजकमल प्रकाशन, प्रा.लि.नई दिल्ली)
2. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास– सामाजिक विघटन और औपन्यासिक प्रतिफल – डॉ. मंजुल गोयल
3. उपन्यास का स्वरूप– डॉ. शशी भूषण सिंहल (आधुनिक प्रकाशन, दिल्ली- 53)
4. कुछ और गद्य रचनाएँ : शमशेरबहादुर सिंह
5. अठारह उपन्यास– राजेन्द्र यादव (राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली)
6. हिन्दी उपन्यास एक अंतर्यात्रा– डॉ. रामदरश मिश्र (राजकमल प्रकाशन, प्रा.लि.नई दिल्ली)
7. हिन्दी के चर्चित उपन्यास– डॉ. भगवती शरण मिश्र (राजपाल एन्ड साँस, नई दिल्ली)
8. हिंदी निबंध – गोविन्दलाल छाबड़ा
9. हरिशंकर परसाई : व्यंग्य की वैचारिक पृष्ठभूमि– राधेमोहन शर्मा
10. हरिशंकर परसाई के व्यंग्यों में वर्ग चेतना– डॉ. आभा भट्ट
11. श्री रामवृक्ष बेनीपुरी– डॉ. रामविलास शर्मा

==========

प्रश्नपत्र – 8. भारतीय काव्यशास्त्र एवं पाश्चात्यसाहित्य-सिद्धांत : Core Course – 08

अध्ययन के निर्धारित क्षेत्र : Total Marks - 100

ईकाई – 1.

काव्य–लक्षण, काव्य-हेतु, काव्य-प्रयोजन, काव्य के प्रकार ,काव्य-गुण, काव्य-दोष ।

ईकाई – 2.

रस, अलंकर, रीति, ध्वनि और वक्रोक्ति सिद्धांतों का सामान्य परिचय, शब्द-शक्ति का परिचय।

ईकाई 3.

साहित्यःपरिभाषा, साहित्य और समाज, कविताः परिभाषा, कविता-तत्व,
कविताःप्रकार (प्रबंध, प्रगीत , मुक्तक आदि के भेदोपभेद)
समालोचनाःस्वरूप, समालोचनाः प्रकार, आलोचक के गुण|

ईकाई 4.

उपन्यासः परिभाषा. तत्त्व और प्रकार, नाटकः परिभाषा, तत्त्व और प्रकार।
कहानीः परिभाषा, तत्त्व और प्रकार, निबंधः परिभाषा, तत्त्व और प्रकार।

ईकाई –5

(अ) निम्नलिखित काव्यालंकारों की परिभाषा,लक्षण और उदाहरण :

श्लेष, यमक, वक्रोक्ति, अनुप्रास, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, मानवीकरण, ।

निम्नलिखित छंदों की परिभाषा, लक्षण और उदाहरण :

दोहा, रोला, सवैया, इन्द्रवज्रा, शार्दुलविक्रीडित, वसंततिलका, मंदाक्रांता, शिखरिणी ।

ईकाई –5 (ब)

हिंदी के प्रमुख आलोचकों का परिचयात्मक अध्ययन एवम् योगदान :
आचार्यरामचंद्र शुक्ल, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी,
डॉ.नंददुलारे वाजपेयी, डॉ.रामविलास शर्मा ।

अंक विभाजन : पांच प्रश्न लिखने है | सभी प्रश्नों के अंक समान हैं |

ईकाई ,1 2,3, और 4 से एक– एक आलोचनात्मक प्रश्न (20 x 4 = 80 अंक)

ईकाई 5 से एक– एक टिप्पणी का प्रश्न (अ) और (ब) (10 x 2 = 20 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें :

1. पाश्चात्य साहित्य-चितन- सं.निर्मला जैन
2. हिदी आलोचना की बीसवीं सदी- निर्मला जैन
3. रस-चितन के विविध आयाम- सं.आनंदप्रकाश दीक्षित
4. भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा हिदी आलोचना- डॉ.रामचंद्र तिवारी
5. भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका- डॉ.नगेन्द्र
6. रस-सिद्धांत- डॉ.नगेन्द्र
7. पाश्चात्य काव्यशास्त्र- डॉ.भगीरथ मिश्र
8. साहित्य के प्रमुख पक्ष- डॉ.राममूर्ति त्रिपाठी
9. भारतीय एवम् पाश्चात्य काव्य-सिद्धांत- डॉ.गणपतिचंद्र गुप्त
10. माक्र्सवादी,समाजशास्त्रीय और ऐतिहासिक आलोचना- डॉ.शशिभूषण पांडेय
11. शास्त्रवादी और स्वच्छंदतावादी साहित्यादर्श और समीक्षा-प्रणाली- पी.वासवदत्ता
12. हिदी आलोचना का विकास- नंदकिशोर नवल
13. भारतीय एवम् पाश्चात्य काव्यशास्त्र- डॉ.विजयपाल सिह

==========

प्रश्नपत्र : 9. प्रादेशिक साहित्य – वळामणां, ओखाहरण : Core Course – 09; Total Marks - 100

पाठ्यपुस्तक : 1. वळामणां - पन्नालाल पटेल
: 2. ओखाहरण - प्रेमानंद

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र:

ईकाई - 1.

पन्नालाल पटेल का साहित्यिक परिचय,
गुजराती आँचलिक (जानपदी) उपन्यास का विकास : सामान्य परिचय,
प्रेमानंद का साहित्यिक परिचय,गुजराती आख्यानक काव्य का स्वरूप, विकास और विशेषताएँ|

ईकाई - 2.

'वळामणां' का कथानक– मूल्यांकन, 'वळामणां' एक सामाजिक उपन्यास के रूप में।
'वळामणां' उपन्यास की संवाद-योजना |

ईकाई - 3.

'वळामणां' उपन्यास के मुख्य एवं गौण पत्रों का परिचय और उनके व्यक्तित्व कि विशेषताए |

ईकाई-4.

'ओखाहरण' के कथानक का मूल्यांकन, 'ओखाहरण' एक सफल आख्यानक काव्य,
'ओखाहरण'में रस - सृष्टि , 'ओखाहरण' में भावात्मकता, 'ओखाहरण' कीभाषा-शैली |

ईकाई-5.

'ओखाहरण' के मुख्य पात्र एवम् गौण- पत्रों का परिचय और उनके व्यक्तित्व कि विशेषताए |

अंक विभाजन : पांच प्रश्न लिखने है | सभी प्रश्नों के अंक समान हैं |
ईकाई 1,2,3, 4 और 5 से एक– एक आलोचनात्मक प्रश्न (20 x 5 = 100)

सन्दर्भ – पुस्तकें :

1. अर्वाचीन गुजराती साहित्य नो इतिहास : 3-4 (साहित्य परिषद प्रकाशन)
2. अर्वाचीन गुजराती साहित्यनी विकास रेखा : 1-2–डॉ. धीरुभाई ठाकर
3. गुजराती नवलकथा : रघुवीर चौधरी– राधेश्याम शर्मा
4. गुजराती नवलकथामा पात्र निरूपण : 2– डॉ. रमेश दवे
5. गुजराती साहित्यनो इतिहास– रमेश त्रिवेदी
6. अर्वाचीन गुजरती साहित्य नो इतिहास - रमेश त्रिवेदी

==========

प्रश्नपत्र – 10. हिंदी भाषा और लिपि तथा हिंदी व्याकरण : Core Course – 10

अध्ययन के निर्धारित क्षेत्र : Total Marks - 100

ईकाई – 1.

वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, पालि, प्राकृत और अपभ्रंश का सामान्य परिचय।
आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं का सामान्य परिचय।
हिंदी भाषा का उदभव और विकास।

ईकाई – 2.

प्रशासन– व्यवस्था और भाषा।
भारत की बहुभाषिकता और संपर्क भाषा की आवश्यकता।
राजभाषा (कार्यालयी हिंदी) की प्रकृति।

ईकाई – 3.

शब्द की परिभाषा तथा व्युत्पत्ति, अर्थ, रचना एवम् प्रयोग कीदृष्टि से शब्दों का वर्गीकरण,
संज्ञाः परिभाषा एवम् भेद, सर्वनामः परिभाषा एवम् भेद |

ईकाई – 4.

विशेषण की परिभाषा एवम् प्रकार, क्रियाकी परिभाषा एवम् प्रकार,
वचनका परिचय, कारक का परिचय ।

ईकाई – 5.

हिंदी कम्प्यूटीकरण , भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी का भविष्य।
हिंदी की उपभाषाएँ एवम् बोलियाँ । प्रशासन– व्यवस्था और भाषा।
भारत की बहुभाषिकता और संपर्क भाषा की आवश्यकता ।
हिंदी की संविधानिक स्थिति |

अंक विभाजन : पांच प्रश्न लिखने है | सभी प्रश्नों के अंक समान हैं |

ईकाई 1,2,3, 4 और 5 से एक– एक आलोचनात्मक प्रश्न (20 x 5 = 100)

संदर्भ-पुस्तकें :

1. हिदी भाषा का इतिहास-डॉ.भोलानाथ तिवारी
2. हिदी भाषा का उद्गम और विकास-उदयनारायण तिवारी
3. राजभाषा हिदीःप्रगति और प्रयाण-सं.इकबाल अहमद
4. मानक हिदी व्याकरण-पृथ्वीनाथ पांडेय
5. प्रयोजनपरक हिदी-सूर्यप्रसाद दीक्षित-योगेन्द्र प्रताप सिह
6. राजभाषा हिदी-कैलाशचंद्र भाटिया
7. राजभाषा का स्वरूप-कैलाशचंद्र भाटिया
8. हिदी व्याकरण - पं.कामताप्रसाद गुर (नागरी प्रचारिणी सभा, काशी)
9. हिदी व्याकरण मीमांसा - काशीराम शर्मा
10. व्यावहारिक हिंदी व्याकरण - डॉ.हरदेव बाहरी(लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
11. हिंदी रूप-रचना भाग : 1-2 (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)

==========

प्रश्नपत्र-11. प्रयोजनमूलक हिंदी Core Course – 11 ; Total Marks - 100

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र

ईकाई – 1.

प्रयोजनमूलकहिंदीः अभिप्राय और उसकी परिव्याप्ति
प्रयोजनमूलकहिंदीः प्रयुक्तियाँ और उसके प्रयोगात्मक क्षेत्र
हिंदी के संवर्धन में प्रयोजनमूलक हिंदी की भूमिका|

ईकाई – 2.

प्रयोजनमूलकहिंदी की विशेषता , प्रयोजनमूलकहिंदी और पारिभाषिक शब्दावली,
प्रशासनिकहिंदी और उसकी शब्दावली, प्रशासनिकपत्राचार और उसके प्रकार |

ईकाई – 3.

हिंदीमें मीडिया लेखन, जनसंचार- माध्यमः अभिप्राय, स्वरूप और विस्तार,
जनसंचार - माध्यमों के प्रकार, संक्षेपण और टिप्पण।

ईकाई – 4.

वैज्ञानिक, तकनीकी एवम् प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में हिंदी, विज्ञापन-लेखन का स्वरूप और महत्त्व,
वर्तनी सम्बन्धी नियमों का परिचय , देवनागरी लिपि और उसकी विशेषताएँ ,
मानक लिपि का अर्थ और महत्त्व |

ईकाई – 5.

हिंदी अनुप्रयोग में अनुवाद की भूमिका, समाचार एवं संवाद लेखनऔर हिंदी,
अनुवादकी अवधारणा, अनुवाद का महत्व और विभिन्न सिद्धांत ।

अंक विभाजन : पांच प्रश्न लिखने है | सभी प्रश्नों के अंक समान हैं |

ईकाई 1,2,3, 4 और 5 से एक– एक आलोचनात्मक प्रश्न (20 x 5 = 100)

संदर्भ-पुस्तकें :

1. प्रयोजनमूलक हिदीः संरचना एवम् अनुप्रयोग-दिनेश गुप्त
2. प्रयोजनमूलक हिदी-दिनेश गुप्त
3. प्रयोगात्मक और प्रयोजनमूलक हिदी-दिनेश गुप्त
4. व्यावसायिक संप्रेषण-डॉ.अनूपचंद्र भायाणी
5. प्रयोजनमूलक हिदीः पारिभाषिक शब्दावली तथा टिप्पण प्रारूपण-डॉ.मधु धवन
6. प्रामाणिक आलेखन और टिप्पण-प्रो.विराज
7. शुद्ध हिदी-डॉ.विजयपाल सिह
8. प्रशासनिक एवम् कार्यालयी हिदी-डॉ.रामप्रकाश एवम् डॉ.दिनेशकुमार
9. कार्यालयी हिदी - डॉ.विजयपाल
10. राजभाषा हिदी और राजकीय पत्र-व्यवहार-घनश्याम अग्रवाल
11. अनुवाद-बोध - डॉ.गार्गी गुप्त
12. अनुवाद-विज्ञान- डॉ.भोलानाथ तिवारी
13. जनसंचारःविविध आयाम- ब्रजमोहन गुप्त
14. मीडिया और साहित्य- सुधीश पचौरी
15. प्रयोजन मूलक हिंदी का अध्ययन- डॉ.सुशीला गुप्ता

==========